

II-260

धर्मसूत्र नञ्जाचार्य सुरत श्री महाविहार

२१३ नमो भगवते वासुदेवाय
यस्य भगवान् ॥ दत्तं यथा शिखरं यद्विह
शकाद वातामिदमने किं कः यथा
नूननायसंका केऽयसंकास्यरुग
कदवायक ॥ ३० ॥ हाहं रुगवान् वम

वि
युवाये ॥ नवं मया ॥ रुमकमी सम
वकिस्मः यायुक ॥ गिनार्यां प्रथम
जिगम त्वनंतं ॥ नयं यनरुगव ॥
वकया दाशिल साहि वंदरुगवक मः
विजुनास्यद्वनजिग ॥ दवात्रायमि

आयजिगाः यवाजिगा रुगा साहि रुगवान् कथं यमियय ॥ रुगवान् ॥ ३१ ॥ शुद्ध त्वदवद्वधजं यकयु रीजा
मध्वनो यवाजिगाः यामवयववो धिसत्वरुगनायनाजिग ॥ ध्वजस्य मथागमस्या कि का डैय गृहीत्वा उप
शुद्ध यवत्या विष्टवर्ध संयका सिमन नाहि जाना मिगमा वा रुवं वा रुहिगत्ववा ॥ नमह विमियिह म्वा आ
कसमरु मिकामयिकाया विर्जा ककट मासा रुगवन्ध्वजं यकयु वना मध्वनो यवाजिगा ॥ मयथा ॥ ३२ ॥
यश्विजय रुजयवाहिनिः शंक विष्टसंक लिष्टरुका निरुज निष्टरु रु निममय ह्यधिका वा यस्या मिशवा ॥

ऊमध्वजवृद्धवताकि न स्यात् ॥ गुननाजय तम स्यात् ॥ सूर्यो ह्यविमल स्यात् ॥ चंद्रो विमल स्यात् ॥ सर्व
 गुरुतकवधानीक न स्यात् ॥ अत्र २ म म सर्व सत्वात् ॥ ऊमध्वजवृद्धवता ॥ ॐ दं दं दं दं दं ॥ जाय कय नी नाम
 धावधि अयवा जि ना म न क विज्ज च नि यद्व वा क ल ह वा वि क र वा वि म र वा स र्वे तु म ज या ह वि च्य ते ॥ ३
 जाय क धु वा मान यि म य ॥ म न शाल धू न य वृ या मं य म हान श क ता नि ॥ हि नू य भान धी स क्त वृ न त लि भृ
 ति ॥ अरु य द्वा नि न क्ता क ना नि य व र्से या वि दाय य नि स र मा ग ल्य व र्ते तां ध लि क्तै स मू यि को ॥ ७ ॥ ॐ द म यो य र म

गवात्मा ल मान का द व द्वा क्त च लि क्त व सा य वा धि स त्व रु ग व वा ता वि क म हा न द वि मि ॥ जा यो धि र्म
 ग क्त य वा वा स धा व ती अ य वा जि मं स मा क ॥ ॥ ॐ श्व मा हि उ य र मा क क र वा र म
 ग म क्त व र्द्वि क क यो नी ना ध व र वा दि म ह ध म र्म वा ॥ ॥ ॐ ह म म व र ॥ ३ ॥ ॐ द म यो य र म
 क य ॥ क र क व म क न क र लि क्तै मं य य र्मु मा नि य वा वा क व या व डा वा यो य र दि क्त म ज य म
 क य वा वा नि म म नि न ध म न य र्मु धी र व द्वा क्त क य क्त उ य र मा क ॥ ॥ ॐ द म यो य र म

II-260

भारत सरकार
राज्य सरकार
राज्य सरकार